Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 1

– Save This Page as a PDF–

परमेश्वर का मेमरा (वचन)

यूहन्ना १: १-१८

खोदना: मेमरा मसीह की तरह कैसे है? यीशु कैसे तम्बू की तरह है? साक्षी के रूप में योचनन बैपटिस्ट की भूमिका क्या है? कौन और कैसे प्रकाश को समझने में विफल रहता है? क्यों? किसी को कृपा और सच्चाई से कैसे दूसरों की भलाई करनी होगी? क्यों यूहन्ना और मूसा हमारे प्राथमिक केंद्र बिंदु यहाँ नहीं हैं? इस गद्द्यांश से, एक व्यक्ति परमेश्वर को कैसे जान सकता है?

विचारना: क्या आपको अदोनाय के परिवार में अपनाया गया है? क्या आप खुद को परमेश्वर की सन्तान के रूप में देखते हैं? क्या परमेश्वर ने कभी अपने किसी बच्चे को अस्वीकार किया होगा? क्या तुम उसे दरवाजे पर रख रहे हो? या रहने वाले कमरे में? या उसे चाबियाँ भी दी हैं? क्यों? इस गद्द्यांश में यीशु के बारे में आपको पर सबसे ज्यादा प्रहार क्या करता है?

नया नियम ग्रीक भाषा में लिखा गया था, और शब्द के लिए यूनानी शब्द लोगोस (LOGOS) आया है। अधिकांश लोग लोगोस की ग्रीक दार्शनिक अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करते हैं जिसके दो अर्थ हैं: कारण, परमेश्वर का विचार, और शब्द, परमेश्वर की अभिव्यक्ति (expression)। यूनानियों विद्वान दर्शन पर लटक गये थे। वे एक सर्वोच्च शक्ति में विश्वास करते थे जिनका दिमाग, कारण, इच्छा और भावना लोगोस के माध्यम से एक अद्भुत तरीके से प्रदर्शित किए गए थे। लेकिन यूहन्ना ग्रीक दार्शनिक नहीं था, वह एक यहूदी मछुआरा था। इसका मतलब यह नहीं है कि योचनन (यूहन्ना) यूनानियों से बात नहीं कर रहा था क्योंकि वह जानबूझकर एक से अधिक अर्थों के साथ अभिव्यक्ति का उपयोग करने का शौकीन था। वह जिस भी शब्द का उपयोग कर रहा था, यह उसका पूर्ण अर्थ लाने का उसका तरीका है। लेकिन यहाँ, यूहन्ना विशेष रूप से यहूदियों के लिए कुछ कह रहा थाl

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 2



यहूदी धर्मशास्त्र मेमरा (Memra) से संबंधित है। यह एक अरामाईक शब्द है जिसका अर्थ है “शब्द”। हिब्रू में शब्द दावार (Davar)है। इसलिए, लोगोस, मेमरा और दावार का मतलब एक ही है — अर्थात शब्द। मसीह के समय तक, तनख का अरामी भाषा में अनुवाद किया जा चूका था, जो यीशु के दिनों में यहूदियों की प्रमुख भाषाओं में से एक था। जब भी तनख ने दावर शब्द का प्रयोग किया, तो अरामाईक संस्करण में मेमरा का इस्तेमाल किया गया। इन्हें तर्गुमिन (the Targumin) कहा जाता था, जिसका मतलब अरामाईक अनुवाद था। लेकिन वे वास्तव में अनुवाद से अधिक थे, वे व्याख्यात्मक अनुवाद थे। उदाहरण के लिए, इब्रानी मूलपाठ में, यशायाह ५२:१३ कहता है . . . मेरा दास बुद्धि में समृद्ध होगा। फलस्वरूप, अरामाईक अनुवाद से बाहर यहूदी धर्मविदों ने मेमरा के बारे में एक संपूर्ण पैमाने पर धर्मशास्त्र विकसित किया।

सब कुछ जो भी रब्बियों ने मेमरा के बारे में सिखाया सब कुछ यीशु मसीह के बारे में सच है। मेमरा के बारे में कहने के लिए रब्बियों के पास सात बातें थीं : पहला, रब्बियों ने सिखाया कि मेमरा एक व्यक्ति थाl यशायाह ४५:२३कहता है: “मैं ने अपनी ही शपथ खाई, धर्म के अनुसार मेरे मुख से यह वचन निकला है और वह नहीं टलेगा . . .l” उन्होंने सिखाया : कि मेमरा में बुद्धि, इच्छाएँ और भावनाएं थीं (यशायाह ९:८; ५५:१०-११; भजन १४७:१५)। इसलिये यूहन्ना ने लिखा : और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी (Shechinah glory) महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा” (यूहन्ना 1:14)l

दूसरा, रब्बियों ने सिखाया कि मेमरा वह साधन था जिसके द्वारा परमेश्वर ने अपनी वाचाएं बाँधीं (उत्पत्ति १५: ४)। इसलिए, पवित्र आत्मा अपने प्रेरित के माध्यम से घोषित करेगी: “इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुंची” (योचानान १:१७)l

तीसरा, उन्होंने सिखाया कि मेमरा मोक्ष का साधन था (होशे १:७)। तो यूहन्ना ने लिखा: फिर भी उन सभी को जिन्होंने उन्हें ग्रहण किया, उनके नाम पर विश्वास करने वालों के लिए, उन्होंने परमेश्वर के पुत्र बनने का अधिकार दिया (यूहन्ना 1:12)। फलस्वरूप, यूहन्ना कह रहा था, “मैं आपको सूचित करने के लिए, और आपके मनोरंजन के

[illegible]

1900 [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 4

परमेश्वर की सन्तान हैं, और अभी तक यह प्रगट नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे! इतना जानते हैं कि जब वह प्रगट होगा तो हम उसके समान होंगे, क्योंकि उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह हैl और जो कोई उस पर यह आशा रखता है, वह अपने आप को वैसा ही पवित्र करता है जैसा वह पवित्र है” (१ यूहन्ना ३:१-३)l ये महत्वपूर्ण पद्य घर चलाते हैं यह जानना कितना महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के बच्चे के रूप में कौन हैं, क्योंकि यह विश्वास इस आधार पर कार्य करता है कि हम अपने जीवन को कैसे जीते हैं। संघर्ष करने वाला किसी भी तरह से कोई भी जीवित नहीं रह सकता है कि वे खुद को किस प्रकार से देखते हैंl

चौथा, रब्बियों ने सिखाया कि मेमरा प्रकाशन का साधन था और परमेश्वर ने मेमरा के माध्यम से खुद को प्रकट किया (उत्पत्ति १५:१; यहेजकेल १:३)। यूहन्ना ने लिखा है: “परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, एकलौता पुत्र जो पिता की गोद में है, उसी ने उसे प्रगट किया” (यूहन्ना १:१८)

पांचवां, रब्बियों ने सिखाया कि मेमरा सृजन का एजेंट था; सब कुछ उसने सृजा, उसने सृजा का अर्थ है मेमरा ने सृजा (भजन ३३:४-६)l इस प्रकार, पवित्र आत्मा ने मानव लेखक को लिखने के लिए प्रेरित किया: “वह आदि में परमेश्वर के साथ था” (यूहन्ना 1: 2)।

छठा, रब्बियों ने सिखाया कि मेमरा था, समय-समय पर, वह परमेश्वर ही था, जबकि दूसरे समयों पर वह परमेश्वर से अलग था। योचनन घोषणा करते हैं : “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था” (योचनन १:१)l

अंतिम, रब्बियों ने सिखाया कि मेमरा तनख़ में उपनिवेशों का एजेंट था। फलस्वरूप, यूहन्ना ने खुलासा किया: “वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उस की ऐसी महिमा देखि, जैसी पिता के एकलौते की महिमा” (यूहन्ना १:१४)l यीशु ने ऐसा कैसे किया? वह रहा, या सचमुच हमारे बीच तम्बू में आ गया (निर्गमन Eq पर मसीह में मेरी टिप्पणी देखें – तम्बू में मसीह)।

पहले दो पद जोर देते हैं कि यीशु मसीह अनंत है; उसके पास कोई शुरुआत नहीं है और उसका कोई अंत नहीं होगा। “आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था” (यूहन्ना 1:1)l कुछ अधिक नहीं कहा जा सकता है। शाश्वत अतीत में किसी भी काल्पनिक बिंदु से पहले, शब्द पहले से ही अस्तित्व में था। अदोनाय ने खुद लोगों के बीच एक पुल बनाने के लिए प्रकाशन से शुरू किया। तो मेमरा की कोई शुरुआत नहीं हैl वह आदि में परमेश्वर के साथ था (योचनन १: २)। साथ के लिए ग्रीक शब्द, या परोस (pros), जब इस तरह प्रयोग किया जाता है, अपनेपन का प्रतीक है। शब्द और ईश्वर स्थान, अंतरंगता और उद्देश्य साझा करने के लिए एक साथ मौजूद थे (भजन ९०: १-२)। असल में, वे बहुत करीब थे कि शब्द परमेश्वर था। वे एक ही सार साझा करते हैं और हेशेम के बारे में जो कुछ भी सच है वह शब्द के बारे में सच है।

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 5

यीशु मसीहा सृष्टि करता है; सभी चीजें उसके द्वारा बनाई गईं। पिछले पद में, यूहन्ना ने कहा कि शब्द समय के परिप्रेक्ष्य (perspective of time) से परमेश्वर है। केवल परमेश्वर शाश्वत है; और उसका वचन भी शाश्वत है, इसलिए वह परमेश्वर हैl अब वह मसीहा को ईश्वरत्व के एक और दृष्टिकोण से सृजनहार के रूप में स्थापित करता हैl यहूदी और अन्य जातियों, दोनों दृष्टिकोणों से जो कुछ भी नहीं बनाया गया वही देवता है। इस प्राचीन दुनिया के दृष्टिकोण से दिमाग में, योचनन ने लिखा: “सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई” (यूहन्ना १:३)l यह क्यों इतना महत्वपूर्ण है? क्योंकि यूहन्ना के शुरूआती दिनों से और आज तक जारी है, झूठे शिक्षकों का दावा है कि यीशु ईश्वर नहीं है। एरियुस, एक तीसरी शताब्दी का झूठा शिक्षक, कहना पसंद करता था, “एक समय था जब वह नहीं था”। यूहन्ना सृष्टि के क्षण को इंगित करता है, तथापि, कहने के लिए कि किसी भी वस्तु के अस्तित्व में आने से पहले, मसीह, सृष्टिकरता कौन है, सभी चीजों को अस्तित्व में लाने के लिये बोला।

यीशु मसीह जीवन का स्रोत है; उसके बिना कुछ भी जीवित नहीं रहता है। उसमें जीवन था, और वह जीवन सभी मानव जाति का प्रकाश था। हमारा आध्यात्मिक और शारीरिक जीवन उससे आते हैं। ज्योति की प्रकृति अंधेरे में चमकाना और उसे दूर करना है। “ज्योति अन्धकार में चमकती है, और अन्धकार ने उसे ग्रहण न किया” (यूहन्ना 1:4-5)l अंत में, एक क़बर में प्रकाश डालकर भी अन्धकार प्रकाश को जीत नहीं सका। इस एक पद में यूहन्ना के सुसमाचार के संदेश का सारा सारांश मिलता है। शैतान और अंधेरे के राज्य के विरोध के बावजूद वचन अन्धकार पर विजयी होगा। जितने आप परमेश्वर के निकट हैं, उतनी ही दूर आप शैतान से हैं।

परमेश्वर की ओर से भेजा गया एक आदमी जिसका नाम यूहन्ना था। परमेश्वर से भेजा गया वाक्यांश सही काल में है, जो उसके मिशन के स्थायी चरित्र को इंगित करता है। वह केवल अग्रदूत था जो उस ज्योति के बारे में गवाही देने के लिए गवाह के रूप में आया था, ताकि उसके माध्यम से सभी विश्वास कर सकें। “वह खुद ज्योति नहीं था; वह केवल ज्योतिकी साक्षी के रूप में आया था” (योचनन १: ६-८)। लेकिन यूहन्ना भी, जिसको यीशु ने सभी भविष्यद्वक्ताओं में से सबसे महान कहा था (मत्ती ११: १ -२३), अन्धकार के उसका कोई मुक़ाबला नहीं था। मोशे, शमूएल, एलिय्याह, यशायाह, यिर्मयाह, दानिय्येल, होशे, जकर्याह और उसके समस्त अन्य भविष्यवक्ताओं की तरह जो उस से पहले आये थे, वे दुनिया को ज्योतिमान करने में नाकाम रहे। आख़िरकार, वे सब केवल इंसान थे। हमारे लिए एक ही आशा है जो प्रकाश का स्रोत है और जो हर दिल और दिमाग को हल्का कर सकती है, क्योंकि वह मानव से कहीं अधिक है।

यीशुआ हा’मशियाच ज्योति है; लेकिन अन्धकार ने उसे ग्रहण नहीं किया था। सच्ची ज्योति जो हर किसी को प्रकाशमान करती है वह छुपी नहीं थी। इसके विपरीत, “सच्ची ज्योति जो हर एक मनुष्य को प्रकाशित करती है जगत में आनेवाली थी (युहन्न 1:9)l इसलिए, जैसे ही उसने स्वयं को अपनी सृष्टि के माध्यम से प्रकट किया (रोमियों १:

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 6

१८-२०), कोई भी अज्ञानता का दावा नहीं कर सकता। “वह जगत में था, और जगत उसके द्वारा उत्पन्न हुआ, और जगत ने उसे नहीं पहिचाना” (योचनन १:१०)l “वह अपने घर आया और उसके अपनों ने उसे ग्रहण नहीं किया” (यूहन्ना १:११)l उसे अस्वीकार करने में, उन्होंने उसे पिता द्वारा भेजे गए प्रकाशन के रूप में स्वीकार करने से इंकार कर दिया और उसके आदेशों का पालन करने से इनकार कर दिया। जब प्रकाश चालू हो जाता है, वे लोग कौन हैं जो इस तथ्य से बे-सुद्ध हैं? किसको बताया जाना चाहिए कि प्रकाश चालू है? ये सही है, अंधे को! इस मामले में आध्यात्मिक रूप से अंधापन है क्योंकि जगत उसे पहचान नहीं पायाl अंत में, एक अँधेरी क़ब्र में प्रकाश डालकर भी अंधेरा प्रकाश को दबा नहीं सकताl

अपने बारे में सबसे महत्वपूर्ण धारणा यह है कि हम ईश्वर के बच्चे हैं और यह कि उनके बच्चे होने का अधिकार यहोवा ने खुद हमें दिया है। “परन्तु जितनों ने उसे ग्रहण किया, उसने उभें परमेश्वर की सन्तान होने का अधिकार दिया, अर्थात उन्हें जो उसके नाम पर विश्वास रखते हैं” (यूहन्ना १:१२)l यूनानी शब्द पिस्तुओ (pisteuo,), अनुवादित विश्वास, यूहन्ना रचित सुसमाचार में 98 बार प्रकट हुआ है। इसकी एक विस्तृत अर्थशास्त्रीय सीमा है और इसका अनुवाद भरोसा (trust), विश्वास (faith), यक़ीन (belief) के रूप में किया जा सकता है। जब यीशु ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया, तो उसने कैसे शुरू किया? उसने हमारे पिता से शुरुआत की (मत्तित्याहू ६: ९ ए)। यह सबसे महत्वपूर्ण अंदरूनी बात है, जब हम अदोनाए से बात करते हैं तो हम व्यक्तिगत बात कह सकते हैं। चूंकि वह हमारा पिता है, तो हमें भी उसके बच्चे होना चाहिए। क्या आपके पास यह आश्वासन है? यदि नहीं, तो आज क्यों नहीं निर्णय करें? अपने ह्रदय की गहराई से प्रार्थना करेंl परमेश्वर ने आपको उसके पुत्र में विश्वास के माध्यम से अपने बच्चे होने का अधिकार दिया है। यह सही नहीं है कि आपने अर्जित किया है। यहां, बाइबल कहती है कि उसने तुम्हें यह दिया है!

हम पैदा हुए बच्चे प्राकृतिक वंश के नहीं हैं, न ही मानव निर्णय या पति की इच्छा से पैदा हुए हैं। इन अभिव्यक्तियों के ढेर को यहूदी गौरव की दौड़ के प्रकाश में समझा जाना है। यहूदियों का मानना था कि उनके यहूदी “पिता” के कारण उनके महान पूर्वजों, अदोनाए उनके पक्ष में होगा। लेकिन यूहन्ना ने इस तरह के एक विचार से इंकार कर दिया। परमेश्वर के बच्चे का जन्म प्राकृतिक जन्म नहीं है; यह पुनर्जन्म के माध्यम से यहोवा का अलौकिक काम है। इसमें सभी मानव पहल से इनकार किया जाता है क्योंकि विश्वासियों का जन्म परमेश्वर (योचनन १:१३) से होता है।

यीशु मसीह, यद्यपि पूरी तरह से मानव, पूरी तरह से पिता को प्रकट करता है। शब्द ने शरीर धारण करलिया और हमारे बीच उसका निवास (या तम्बू) बना दिया गया। इस पद में हम पाते हैं कि मेमरा स्वयं मसीहा है। यह यीशु नाम का एक आदमी नहीं था, जो नासरत में बड़ा हुआ और एक दिन का फैसला किया कि वह ईश्वर था; यह ईश्वर शब्द था जिसने मनुष्य बनने का फैसला किया था। हमने उसकी शकीनाह महिमा देखी है, एक और एकमात्र पुत्र की शकीनाह महिमा, जो कृपा और सत्य से भरा हुआ, पिता से आया (यूहन्ना १:१४)। वह हमारे

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 7

बिना जीना सहन नहीं कर सका, इसलिए उसने अपना सबसे बड़ा उपहार – स्वयं को हमारे लिए दे दिया।

जब हम पहले और चौदहवें पदों का गठबंधन करते हैं तो मेमरा के बारे में योचनन के संदेश का सार देखा जा सकता है। आदि में वचन था, और वचन शरीर धारण करके हमारे बीच तम्बू बन गया; और वचन परमेश्वर के साथ था, और हमने उसकी महिमा देखी, केवल कृपा और सत्य से भरा, जो पिता से आया; कृपा और सत्य से भरा वचन परमेश्वर था, (योचनन १:१ और १४)।

प्रस्तावना मसीहा की विशिष्टता को रेखांकित करते हुए तीन बिंदुओं के साथ समाप्त होती है। प्रथम, हमें यूहन्ना बप्तिस्मादाता को उनकी श्रेष्ठता के लिये याद दिलाई जाती है। योचनन ने लगातार उसके बारे में गवाही दी है। उसने चिल्लाकर, कहा, “यह वही है, जिसका मैंने वर्णन किया कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है क्योंकि वह मुझ से पहले था” (योचनन 1:15)l येशुआ यूहन्ना से छोटा था और उसने यूहन्ना के बाद में अपनी सेवा को शुरू कियाl लेकिन मसीह के पूर्व-अस्तित्व की वजह से, योचनन ने कहा कि वह मुझ से पहले था।

दूसरे, वह उन सभी की जरूरतों को पूरा करता है जो उसके हैं। “उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात अनुग्रह पर अनुग्रह” (यूहन्ना 1:16)l ईश्वर की कृपा लगातार विश्वासियों के लिए आती है जैसे लहरें लगातार किनारे पर आती हैं। विश्वासियों को कृपा के स्थान पर लगातार परमेश्वर की कृपा का प्रमाण प्राप्त होता है जो वह हमें पहले से ही दे चुका हैl पंच्ग्रन्थ (Torah) मूसा के माध्यम से दिया गया था (2 कुरिन्थियों ३: ६-१६); कृपा और सत्य यीशु मसीह के माध्यम से आया (योचनन १:१७)। कभी-कभी लोग ऐसा भी सोचते हैं कि यह पद मूसा की निंदा करता है, लेकिन सच्चाई के आगे कुछ नहीं हो सकता। तथ्य यह है कि एक मात्र आदमी, जिसके लिए दिव्यता का कोई दावा कभी नहीं किया गया है, परमेश्वर के वचन के साथ तुलना की जानी चाहिए कि पवित्र आत्मा मूसा का कितना सम्मान करती है। न ही यह तोराह को नीचा दिखाती है, अदोनाए का उसके के अपने बारे में कृपा और सत्य की तुलना करके सनातन शिक्षणl मत्ती हमें बताता है कि यीशु ने स्वयं घोषित किया कि वह तोराह या भविष्यवक्ताओं की पुस्तकों को खत्म करने के लिए नहीं आया था, लेकिन उन्हें पूरा करने के लिए (मत्ती ५: १७-२०)। असल में, उसके बाद उन्होंने तोराह को उन तरीकों से समझने के लिए आगे बढ़े जो इसके अर्थ और आज्ञाओं को स्पष्ट करते थे (मत्ती५: २१-४८)। अनुग्रह और सत्य परमेश्वर के व्यक्तिगत गुण हैं जो यीशु ने न केवल अपनी सार्वजनिक सेवा के दौरान प्रकट किये, लेकिन सृष्टि की शुरुआत के बाद से लगातार वह मानव जाति को दे रहा है।

तीसरे, पहली नज़र में यूहन्ना १:१८को पिछले पदों के साथ बहुत छोटा करना प्रतीत होता है। परन्तु वास्तव में, यह पूरी प्रस्तावना को चरमोत्कर्ष बनाता है, इस बात पर बल देते हुए कि मसीहा परमेश्वर के साथ निकटतम रिश्ते में है, पिता जिसे किसी

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 8

ने कभी नहीं देखा है (यूहन्ना 1:18ए)। फिर भी उन लोगों ने देखा जो येशुआ ने एडोनाई को देखा था। इसके अलावा, मोशे ने परमेश्वर की पीठ देखी (निर्गमन ३३: १९-२३), यशायाह ने देखा कि यहोवा बहुत ही ऊंचे स्थान पर एक सिंहासन पर बैठा था (यशायाह 6:1)। इज़राइल के सत्तर के बुजुर्गों ने भी इसाएल के परमेश्वर को देखा … … और उन्होंने उसके साथ खाया और उसके साथ पिया (निर्गमन २४: ९-११)। इसलिए, इस गद्द्यंश का अर्थ यह होना चाहिए कि इस गद्द्यंश का अर्थ यह होना चाहिए कि हाशेम की अंतिम महिमा और आवश्यक प्रकृति पापपूर्ण मानवता से छिपी हुई है। तब यूहन्ना ने हमें पहले पद की सच्चाई में वापस लाकर अपनी प्रस्तावना को समाप्त कर दिया कि वचन ही ईश्वर है। यीशु अद्वितीय और एक और एकमात्र पुत्र है, जो स्वयं परमेश्वर है और वह पिता के साथ निकटतम संभावित संबंध में है, उसने पिता बारे में जानकारी दी है (यूहन्ना 1: 18 बी)। क्रिया ने उसकी जानकारी दी है, जिसका अनुवाद लूका २४:३५में किया गया है, जहां इम्माऊस की सड़क पर दो चेलों ने यीशु को पहचाना जिन के साथ यीशु ने रोटी तोडी। इसका मतलब है कि यीशु ने हम पर परमेश्वर पिता को इस तरह से प्रकट किया कि सभी उसे पहचान सकें। जैसा कि मेशियाक स्वयं ने अपनी सेवा के अंत में कहा : जिसने मुझे देख है उसने पिता को देखा है (योचनन १४: ९ बी)।l तो यदि आप जानना चाहते हैं कि परमेश्वर कौन है और वह कैसा है, तो यीशु की ओर देखो और आप उसे जान लेंगे।

असली विश्वासी होने का क्या अर्थ है जिसका जीवन प्रामाणिक विश्वास के लक्षण बतलाता हो? यूहन्ना पांच व्यावहारिक गुणों का वर्णन करता है जिन्हें उनके पवित्र लोगों के जीवन में देखा जा सकता है (व्यवस्थाविवरण ३३: २-३; अय्यूब ५: १; भजन १६: ३ और ३४: ९; जकर्याह १४: ५; यहूदा १)।

प्रथम, असली विश्वासी अपनी सब आवश्यकताओं को पूरी करने के लिए स्वतंत्र नहीं हैं। केवल तभी जब हम परमेश्वर पर भरोसा करते हैं कि हमारी कमजोरियों और हमारी अपर्याप्तताओं को स्वीकार करने के लिए हम अपने परिवार और दोस्तों के साथ घनिष्ठता का आनंद लेंगे। जबकि गर्व हमें हमारे पापों में फंसता रहता है, दोष पूर्णता ने येशुआ को हमारे जीवनों में हमारे लाभ के लिए और दूसरों के लाभ के लिए काम करने का मौका दिया हैl

दूसरे, असली विश्वासियों को उनके चारों ओर के लोगों को जानने में बहुत व्यस्त नहीं रहते हैं। मसीहा में प्रामाणिक विश्वास दूसरों के मूल्य को पहचानता है, उनकी असफलताओं या उनकी कमियों के बावजूद, और उन्हें अच्छी तरह से जानने के लिए पर्याप्त समय समर्पित करता है। लोग, कार्य नहीं, उनकी सर्वोच्च प्राथमिकता है क्योंकि वे अपने विश्वास को जीते हैं।

तीसरा, वास्तविक विश्वासियों को परमेश्वर के वचन पर विश्वास है। वास्तविक विश्वास परमेश्वर के वचन के बारे में जितना संभव हो उतना जानना चाहता है, क्योंकि यह अपने ज्ञान में भरोसा नहीं करता है। सच्चे विश्वासियों को यह जानने के लिए और अधिक समर्पित हैं कि अदोनाए जीवन के बारे में क्या सोचता है और हमें

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 9

कैसे जीना चाहिए, दुनिया की तुलना में (१यूहन्ना २: १५-१७) जीवन के बारे में सोचता है कि हमें कैसे जीना चाहिए।

चौथा, वास्तविक विश्वासियों को पूरी तरह से केवल अपने दृष्टिकोण पर भरोसा नहीं रखना चाहिए। वफादार विश्वासियों को उनके पापपूर्ण स्वरूपों के निरंतर प्रभाव को स्वीकार करने में कोई परेशानी नहीं होनी चाहिए (भजन 51: 1-5; रोमियों 3:23), और वे निर्णय लेने के दौरान अपने प्रभाव को अस्वीकार करने के लिए जो कुछ भी कर सकते हैं वह करते हैं। वे परमेश्वर के वचन में सच्चाई की तलाश करते हैं, वे रुच हाकोदेश की अगुवाई के लिए प्रार्थना करते हैं, वे अपने आप को परिपक्व सलाहकारों के ज्ञान के लिए प्रस्तुत करते हैं, और वे दूसरों की रचनात्मक आलोचना के प्रति संवेदनशील रहते हैं।

पांचवें, वास्तविक विश्वासियों गंभीरता से खुद को (या इस गिरती दुनिया में जीवन) नहीं लेते हैं। यह सुझाव नहीं देना है कि कभी-कभी जीवन गंभीर नहीं होता या यहां तक कि निराशाजनक हो जाता है। एक गिरती दुनिया में जीवन मुश्किल है! फिर भी, असली विश्वासियों ने इस दुनिया की चीजों पर हल्का स्पर्श रखा है। उन्हें एहसास है कि अन्याय, दुर्व्यवहार और झटके इस दुनिया में एक विदेशी होने का परिणाम हैं क्योंकि उनकी असली नागरिकता स्वर्ग की है क्योंकि हम अपने प्रभु यीशु मसीहा और उद्धारकर्ता का उत्सुकता से इंतजार करते हैं, (फिल ३:२०)। वे एक रचनात्मक परिप्रेक्ष्य बनाए रखते हैं, वे अपनी खुशी चुराने के लिए किसी के या किसी भी चीज़ से इनकार करते हैं। येशुआ ने कहा कि वह आया था ताकि हम जीवन प्राप्त कर सकें, और इसे अधिक प्रचुर मात्रा प्राप्त कर सकें (यूहन्ना १०:१०)। तो वे हर मौके पर हंसते हैं।

यदि आपने कभी परमेश्वर के साथ अपने रिश्ते को निश्चित नहीं किया है तो मुझे आपको इस तरह प्रार्थना करने के लिए प्रोत्साहित करने दें:

प्रिय स्वर्गीय पिता, मेरी जगह लेने के लिए और मेरे पाप को अपने ऊपर लेने के लिए और क्रूस पर मरने के लिए धन्यवादl मुझे एहसास है कि मेरे कार्यों के आधार पर आपके साथ मेरा कोई रिश्ता नहीं हो सकता। लेकिन मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि मसीहा में मुझे क्षमा किया गया है, और अभी, अगर मैंने पहले कभी ऐसा नहीं किया है, तो मैं आपको अपने जीवन में अब और इसी वक्त ग्रहण करता हूं। मैं समझता हूं कि इस प्रार्थना के शब्द मुझे नहीं बचा सकते हैं, परन्तु मुझे आप पर मेरा विश्वास बचाता है। मेरा मानना है कि येशुआ मेरे पापों के लिए मारा गया और तीसरे दिन मुर्दों मेंसे जी उठा, और अब मैं अपने मुंह से कबूल करता हूं कि यीशु मसीह ही प्रभु है।

अब मैं आपके बच्चे के रूप में आपके पास आया हूँ। मुझे अनन्त जीवन देने के लिए आपका धन्यवाद। मैं शैतान के किसी भी झूठ को त्याग देता हूं अन्यथा मुझे आपका

Af – परमेश्वर का मेमरा (वचन) यूहन्ना १: १-१८ | 10

बच्चा बुलाए जाने का कोई अधिकार नहीं है, और मैं आपको धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे यह अधिकार दिया है। अब मैं अपने आप में कोई भरोसा नहीं रखता; मेरा विश्वास आप में है और तथ्य यह है कि मैंने जो किया है उसके द्वारा नहीं, लेकिन क्रूस पर मसीह के माध्यम से आपने जो किया है उसके द्वारा मुझे उद्धार प्राप्त हो चूका है। अब मैं आपके द्वारा दिए गए मुफ्त उपहार के कारण परमेश्वर के बच्चे के रूप में आपको स्वीकार करता हूं। मैं खुशी से इसे ग्रहण करता हूं और इसे अनंत काल तक के लिए स्वीकार करता हूं। यीशु के नाम में मैं यह प्रार्थना मांगता हूं। आमीनl

अब, परमेश्वर को आपको अपने स्वर्ग में क्यों जाने देना चाहिए?

यह सही है, क्योंकि यीशु आपके पापों के लिए मर गया था।